बहुवचन

हिंदी की अंतरराष्ट्रीय त्रैमासिक पत्रिका

संरक्षक संपादक
रजनीश कुमार शुक्ल

अतिथि संपादक
नंद किशोर पाण्डेय

संपादक
अशोक मिश्र

हिंदी साहित्य का वैश्विक चिंतक : कमल किशोर गोयनका

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा का प्रकाशन

बहुवचन
अंक : 61-62 (अप्रैल-सितंबर 2019) ISSN- 2348-4586
प्रकाशक : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

संपादकीय संपर्क :
संपादक बहुवचन
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र)
मो. संपादक- 7888048765, 09422386554, ईमेल- bahuvachan.wardha@gmail.com
E-mail : amishrafaiz@gmail.com

प्रकाशन प्रभारी : रामानुज अस्थाना
ईमेल- ramanujasthana123@gmail.com फोन- 07152-232943, मो. 09422823617

© संबंधित लेखकों एवं रचनाकारों द्वारा सुरक्षित
प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं विश्वविद्यालय की स्वीकृति आवश्यक है।
प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा या संपादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है।

पत्रिका न मिलने की शिकायत इस पते पर करें :
प्रचार प्रसार : सुरेश कुमार यादव
फोन : 07152-232943, मो. 09730193094, ईमेल- s.ujala80@gmail.com

बिक्री और प्रसार कार्यालय :
प्रकाशन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
गांधी हिल्स, पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा- 442001 (महाराष्ट्र) भारत
फोन : 07152-232943, फैक्स : 07152-230903

वार्षिक सदस्यता के लिए बैंक ड्राफ्ट महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नाम से, जो वर्धा में देय हो, ऊपर लिखित बिक्री कार्यालय के पते पर भेजें। मनीऑर्डर स्वीकार्य नहीं।

यह अंक : रु.150/-
सामान्य अंक : 75/- वार्षिक शुल्क रु. 300/- द्विवार्षिक शुल्क रु. 600/- व्यक्तिगत
संस्थाओं के लिए वार्षिक शुल्क रु. 400/- द्विवार्षिक रु. 800/- (डाक खर्च सहित)
विदेश में : हवाई डाक : एक प्रति 15 अमेरिकी डालर/7 ब्रिटिश पाउंड
समुद्री डाक : एक प्रति 8 डालर/5 ब्रिटिश पाउंड
आवरण : प्रीडा क्रिएशंस

BAHUVACHAN
A QUARTERLY INTERNATIONAL JOURNAL IN HINDI
PUBLISHED BY: MAHATMA GANDHI ANTARRASHTRIYA HINDI VISHWAVIDYALAYA
GANDHI HILLS, POST-HINDI VISHWAVIDYALAYA, WARDHA-442001 (MAHARASHTRA) INDIA.

मुद्रण : विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स ई-33, सेक्टर A 5/6 ट्रोनिका सिटी यू.पी.एस.आई.डी.सी औद्योगिक क्षेत्र, लोनी, जिला- गाजियाबाद- 201102 (उ.प्र.) फोन- 0120-2646090

अनुक्रम

अतिथि संपादक की कलम से...

यशस्वी रचनाकारों के शोधार्थी और नवीन के प्रतिष्ठाता 5

डॉ. कमल किशोर गोयनका का आलोचनात्मक लेखन

प्रेमचंद और समाजवाद 14

प्रेमचंद : राष्ट्र एवं स्वराज्य का कथात्मक महासमर 34

प्रेमचंद : रामविलास शर्मा और मैं 44

'गोदान' की रचना का रहस्य : रूपरेखा अंग्रेजी में 58

प्रेमचंद : उर्दू से हिंदी में आना-अनसुलझे सवाल 63

प्रेमचंद का संस्कृति चिंतन 95

प्रेमचंद आलोचना के मिथक तथा उपेक्षा-अवमूल्यन की दिशाएं 107

प्रेमचंद का एक अप्राप्य लेख : पूंजीवाद से भयंकर है साम्यवाद 114

संस्मरण

आचार्य विष्णुकांत शास्त्री : गंगा की निर्मलता, पावनता एवं संस्कृति के प्रतीक-मनीषी 117

बुलंदशहर : मेरी मातृ-भूमि व संस्कार-भूमि 125

लिखते-पढ़ते

प्रेमचंद पर काम करते हुए जीना चाहता हूं... 130

मूल्यांकन

हिंदी के माहिर-ए-प्रेमचंद (प्रेमचंद विशेषज्ञ) डॉ. गोयनका/ज्ञानचंद जैन 137

कमल किशोर गोयनका का साथ/मंगलमूर्ति 141

गोयनका बनाम प्रेमचंद/सभापति मिश्र 149

अनुसंधान और आलोचना के शिखर पुरुष/व्यास मणि त्रिपाठी 156

प्रेमचंद मिशन के समर्पित योद्धा/कमलेश भट्ट कमल 163

प्रेमचंद अध्ययन की नई राहों का अन्वेषण/नवीन नंदवाना 171

गोयनका की रचनाधर्मिता : एक अनुशीलन/ए.अच्युतन 180

प्रेमचंद और डॉ. गोयनका/आदर्श मिश्र 187

व्यास-पुरुष : कमल किशोर गोयनका/विनय षडंगी राजाराम 193

प्रेमचंद साहित्य के अनन्यतम अध्येता/कृष्ण वीर सिंह सिकरवार 196

प्रवासी-संस्मरण

मॉरीशस बंधु : कमल किशोर गोयनका/अभिमन्यु अनत 203

सृजनरत डॉ. कमल किशोर गोयनका/सत्यदेव टेंगर 207

वैश्विक भारतीयता की अंतश्चेतना के उपासक/पुष्पिता अवस्थी 211

डॉ. गोयनका और प्रवासी हिंदी साहित्य/उषा राजे सक्सेना 216

प्रवासी-साहित्य और डॉ. गोयनका/पुष्पा सक्सेना 221

सत्य के मेरुदंड पर विकसित कमल/अनिल प्रभा कुमार 230

गोयनकाजी : मेरी दृष्टि में/अनीता कपूर 235

गोयनकाजी-एक हस्ती/अर्चना पैन्यूली 237

संवाद

'रचनाकार अलग से प्रगतिशील नहीं' 241

(डॉ. कमल किशोर गोयनका से जयप्रकाश मानस की बातचीत)

आँखिन-देखी

शोध-साधना की अद्भुत उपलब्धि : प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य/विष्णुकांत शास्त्री 255

अप्राप्य और अज्ञात का साक्षात्कार/विजयेंद्र स्नातक 262

कुछ उनकी, कुछ अपनी/ कुसुम गोयनका 264

प्रेमचंद, 'क्रिकेट मैच' तथा राष्ट्रप्रेम/इंद्रनाथ चौधुरी 267

अनन्य प्रेमचंद का असाधारण संपादन/विजय बहादुर सिंह 274

साधक-समीक्षक डॉ. गोयनका/प्रेमशंकर त्रिपाठी 282

गांधी की पत्रकारिता में प्रतिमानों का संधान/कृपाशंकर चौबे 287

कहानियों में प्रेमचंद/श्रीभगवान सिंह 295

गोयनका काजल भी, किरकिरी भी/देवेंद्र दीपक 302

कमल किशोर उर्फ प्रेमचंद गोयनका/रमेश दवे 306

सारस्वत साधना की प्रतिमूर्ति : डॉ. गोयनका/अर्चना पांडेय 314

लेखकों की प्रतिक्रियाएं 317

'प्रेमचंद चित्रात्मक जीवनी' : कुछ मत-सम्मत ३२६

चिट्ठी-पत्री 329

छायाचित्रों में गोयनका ३३५

प्रेमचंद अध्ययन की नई राहों का अन्वेषण

नवीन नंदवाना

समकालीन हिंदी साहित्य का फलक बहुत ही व्यापक और विस्तृत है। आज देश भर में कई ऐसे लेखक हैं, जिन्होंने अपनी कलम की ताकत के बल पर साहित्य जगत् में विशिष्ट ख्याति अर्जित की है। कथा, कविता, नाटक और निबंध साहित्य के साथ-साथ अनुसंधान और आलोचना का क्षेत्र भी किसी भांति कमतर नहीं है। यदि हम आलोचना और अनुसंधान जगत् की बात करें तो इस विशाल सागर में चमकता हुआ एक बड़ा हस्ताक्षर हमारे ध्यान में आता है और वह है- डॉ. कमल किशोर गोयनका।

डॉ. कमल किशोर गोयनका ने अपने जीवन के विगत लगभग 50 वर्ष प्रेमचंद साहित्य से जुड़ी इसी आलोचना और अनुसंधान कर्म को समर्पित करके हिंदी जगत् की श्रीवृद्धि का अनुपम कार्य किया। हिंदी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद के जीवन और साहित्य को आधार बनाकर आपकी कलम बहुत विस्तार और गंभीरतापूर्वक चली। आपने इस विषय संबंधी लगभग 30 पुस्तकों की रचना कर प्रेमचंद साहित्य से जुड़े नए आयामों की ओर भी हिंदी संसार का ध्यान आकृष्ट किया। उनकी कलम केवल यहीं तक नहीं रुकी। प्रेमचंद को अपने आलोचना और अनुसंधान का विषय बनाने के साथ-साथ हिंदी संसार के 23 अन्य रचनाकारों के योगदान को भी केंद्रित कर लेखन किया। इन रचनाकारों व रचनाओं में 'मन्मथनाथ गुप्तः प्रतिनिधि कहानियां', 'जिज्ञासाएं मेरी : समाधान बच्चन के', 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदीः कुछ संस्मरण', 'जगदीश चतुर्वेदीः एक विवादास्पद रचनाकार', 'विष्णु प्रभाकर : प्रतिनिधि रचनाएं', 'यशपालः कुछ संस्मरण', 'रामकुमार वर्मा : नाटक रचनावली', 'रवींद्रनाथ त्यागीः प्रतिनिधि रचनाएं', 'दिनेश नंदिनी डालमिया से बातचीत', 'मंजुल भगतः समग्र कथा साहित्य', 'हिंदी की व्यंग्यत्रयी', 'आपातकाल की प्रतिनिधि कविताएं', 'गांधीः पत्रकारिता के प्रतिमान' और 'पंडित दीनदयाल उपाध्यायः व्यक्ति और दर्शन' प्रमुख हैं।

प्रेमचंद साहित्य को आधार बनाकर डॉ. कमल किशोर गोयनका ने जो लिखा वह सदियों तक स्मरण किया जाएगा। प्रेमचंद साहित्य पर रचित ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथों में 'प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान', 'प्रेमचंद अध्ययन की नई दिशाएं', 'प्रेमचंदः कुछ संस्मरण', 'प्रेमचंद की अप्राप्य कहानियां', 'प्रेमचंद विश्वकोश', 'प्रेमचंद पत्र कोश', 'प्रेमचंद की कहानियों

का कालक्रमानुसार अध्ययन', 'प्रेमचंद का कहानी दर्शन', 'प्रेमचंद : चित्रात्मक जीवनी', 'प्रेमचंद की हिंदी-उर्दू कहानियां', 'प्रेमचंद : देशप्रेम की कहानियां', 'प्रेमचंद के नाम पत्र', 'प्रेमचंदः बाल साहित्य समग्र', 'प्रेमचंद और रंगभूमि उपन्यास', 'प्रेमचंदः अनछुए प्रसंग' और 'प्रेमचंदः वाद प्रतिवाद और संवाद' आदि प्रमुख हैं। 'प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन' पुस्तक पर आपको वर्ष 2014 का व्यास सम्मान भी मिल चुका है।

हिंदी के प्रवासी साहित्य ने भी डॉ. कमलकिशोर गोयनका की कलम का सान्निध्य पाकर अपनी महक चहुंओर फैलाई। इस दिशा में 'अभिमन्यु अनतः एक बातचीत', 'अभिमन्यु अनतः प्रतिनिधि रचनाएं', 'मॉरिशस की हिंदी कहानियां', 'अभिमन्यु अनतः समग्र कविताएं', 'हिंदी का प्रवासी साहित्य', 'प्रवासी साहित्यः जोहान्सबर्ग से आगे' आदि प्रमुख हैं।

इतना लेखन और अनुसंधान एक साधारण लेखक के बूते का नहीं होता है। इतना सब करने के लिए एक लंबी साधना की जरूरत होती है। डॉ. गोयनका के इसी विशिष्ट व्यक्तित्व और रचना प्रक्रिया के विषय में डॉ. अनूप सिंह लिखते हैं कि- 'डॉ. गोयनका जी ऐसे हस्ताक्षर हैं, जिनसे कोई भी, कभी भी बतिया सकता है। एक गुरु के जीवंत हस्ताक्षर, पास बैठकर जीवन की उधड़ी पर्तों को बिना सुई-धागे के सीने की समझ मैंने उनसे पाई है। मैं समझ गया हूं कि साहित्य निरंतर जलाई जाने वाली दियासलाई की तीलियों की तरह है। जहां एक तीली समाप्त होने से पहले ही दूसरी तीली जलाने को तैयार रखनी पड़ती है।'[1]

हिंदी साधना में निमग्न ऐसे अप्रतिम हस्ताक्षर डॉ. कमल किशोर गोयनका का जन्म 11 अक्टूबर, 1938 को उत्तरप्रदेश के बुलंदशहर नामक स्थान पर एक प्रतिष्ठित जमींदार सेठ चंद्रभान गोयनकाजी के घर हुआ। उनके जीवन की एक बड़ी समयावधि प्रेमचंद साहित्य को केंद्र बनाकर गुजरी है। प्रेमचंद की छवि को एक वाद या विचार के लोगों ने एक निश्चित सांचे-खांचे में ढाल दी थी, उसे डॉ. गोयनका के साहित्य ने बहुत कुछ बदला। कई समसामयिक साहित्यकारों की प्रतिक्रियाओं को सहते हुए भी अपने लक्ष्य की ओर निश्कंप बढ़ते जाना हम डॉ. गोयनका से सीख सकते हैं। कई दिनों की साधना और घंटों पुस्तकालय में बैठकर डॉ. गोयनका ने प्रेमचंद की 30 अप्राप्य कहानियों को खोज निकाला। जिन्हें शायद प्रेमचंद के पुत्र और रचनाकार अमृतराय भी न खोज पाए। स्वयं गोयनकाजी के शब्दों में- 'मैंने प्रेमचंद पर जो कार्य किया था, उसकी प्रगतिशील समाज द्वारा कटु आलोचना होना स्वाभाविक ही था, क्योंकि प्रेमचंद को लेकर उनकी अनेक भ्रामक अवधारणाएं ध्वस्त हो गई थीं। यह उनकी बौद्धिक पराजय थी और कार्ल मार्क्स उनकी रक्षा के लिए नहीं आ सकते थे, पर वे केवल अपने तर्कों से लड़ सकते थे, जो उनके पास नहीं थे। प्रगतिशीलों ने अपने तर्क बेबुनियाद जमीन पर बनाए थे और उन्हें किसी न किसी दिन ध्वस्त होना ही था। यह प्रेमचंद पर मेरी शोध का सुखद, सार्थक एवं सर्वस्वीकृत परिणाम था।'[2] 'प्रेमचंद विश्वकोश' की महत्ता इस बात से भी समझी जा सकती है कि गोपालराय द्वारा की गई इसकी आलोचना को डॉ. नामवर सिंह ने 'आलोचना' पत्रिका में स्थान दिया। डॉ. गोयनका का कथन है कि- 'प्रेमचंद के पूरे साहित्य को समझने की जरूरत है और उनके लेख चुनिंदा अध्ययन करने के लिए नहीं है। उन्होंने विभिन्न लघु

कहानियों और उपन्यासों में तीन हजार के आसपास पात्रों को चित्रित किया है जो कि हमारे दैनिक जीवन से प्रेरित है। एक विशेष कहानी पढ़कर किसी लेखक का विश्लेपण करना उसके व्यक्तित्व के साथ सरासर अन्याय है।'[1]

प्रेमचंद साहित्य को विश्व दृष्टि एवं एक कुशल आलोचक की भांति नए आयामों से प्रकाश में लाने का श्रेय डॉ. कमल किशोर गोयनका को जाता है। 'प्रेमचंद : कहानी रचनावली' के प्रकाशन के पश्चात् डॉ. शिवकुमार मिश्र ने तो साहित्य अकादेमी के भवन में डॉ. कमल किशोर गोयनका को गले से लगा लिया और अमरता का वरदान देते हुए कहा कि 'गोयनका तुम 'प्रेमचंद: कहानी रचनावली' जैसे कार्य करके अमर हो गए हो।' यह एक वामपंथी लेखक की दक्षिणपंथी लेखक के प्रति प्रेमचंद संबंधी-कार्य की श्रेष्ठता और महत्ता की स्वीकृति थी।[4] गोयनकाजी के लेखन व श्रमसाध्य कार्य को हिंदी के कई विद्वानों ने स्वीकृति दी है। मत विभिन्नता के बावजूद प्रदीप पंत का मत है कि- 'डॉ. कमल किशोर गोयनका की इज्जत करने का एक अन्य प्रमुख कारण है, प्रेमचंद पर उनका शोधपूर्ण कार्य खास तौर पर प्रेमचंद विश्वकोश। उन्होंने प्रेमचंद के कृतित्व और व्यक्तित्व के परिचित पक्षों को तो रेखांकित किया ही है, उनके कृतित्व और व्यक्तित्व के बहुतेरे अपरिचित पक्षों को भी सामने ले कर आए। जैसे कि प्रेमचंद की अप्राप्य कहानियों तथा अन्य रचनाओं को सामने लाना, उनके रचना-संसार को कालक्रमानुसार प्रस्तुत करना, उनकी चित्रात्मक जीवनी से पाठकों को परिचित कराना। अन्य शोधपूर्ण कार्य आदि। हाल में प्रेमचंद की समस्त कहानियों को भी उन्होंने साहित्य अकादमी के लिए कई खंडों में प्रस्तुत किया है। यह सब तो ठीक। इन पर किसी आपत्ति की गुंजाइश भी नहीं है। थोड़ा-थोड़ा विवाद भी हो सकता है तो ऐसी बातों पर कि कौन कहानी पहले उर्दू में आई, फिर हिंदी में या कौन कहानी हिंदी में पहले आई, उर्दू में बाद में। ऐसे ही कुछ अन्य छुटपुट विवाद भी संभव हैं, लेकिन गोयनका ने प्रेमचंद के व्यक्तित्व के उन पक्षों को छुआ या प्रस्तुत किया जिनकी जानबूझकर या अनजाने में अनदेखी कर दी गई थी।'[5]

'प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान' नामक शोध प्रबंध को डॉ. कमल किशोर गोयनका ने छः अध्यायों में बांटते हुए शिल्प का अर्थ, स्वरूप और परिभाषा पर विचार करते हुए प्रेमचंद के उपन्यासों का रचनाकाल के आधार पर विवेचन-विश्लेषण किया। यह ग्रंथ औपन्यासिक तत्त्वों के साथ-साथ कालक्रमानुसार व तुलनात्मक दृष्टि से भी प्रेमचंद के साहित्य का विवेचन करता है। 'प्रेमचंद : कुछ संस्मरण' के माध्यम से डॉ. कमल किशोर गोयनका ने 28 संस्मरण संगृहीत कर प्रेमचंद के जीवन व साहित्य के अनछुए प्रसंगों को भी छुआ है। 'प्रेमचंद: अध्ययन की नई दिशाएं' पुस्तक भी अपनी महती भूमिका रखती है। इस पुस्तक के विषय में डॉ. कृष्ण वीर सिंह सिकरवार का मत है कि- 'प्रस्तुत पुस्तक में 31 आलेखों को संकलित किया गया है जो प्रेमचंद साहित्य के संदर्भ में अध्ययन की नई दिशाओं को खोलते हैं। डॉ. गोयनका के ये महत्वपूर्ण लेख प्रेमचंद-साहित्य समीक्षा में आई जड़ता को न केवल छिन्न-भिन्न करते हैं, बल्कि प्रेमचंद के संबंध में अध्ययन के नए द्वारों को उद्घाटित करते हैं।'[6] इस कथन से इस बात को भली-भांति समझा जा सकता है कि डॉ. कमल किशोर गोयनका

ने प्रेमचंद को एक सांचे-खांचे से बाहर निकालकर एक नए अंदाज में जानने व समझने की दिशाएं खोली हैं। 'पूंजीजीवाद से भयंकर है समाजवाद' जैसे मुंशी प्रेमचंद के अप्राप्य लेख को भी डॉ. कमल किशोर गोयनका ने खोज निकाला और उसे प्रकाशित कराया।

देवी नागरानी प्रेमचंद की कहानियों का कालक्रमानुसार अध्ययन पुस्तक समीक्षा करते हुए अपने लेख 'प्रेमचंद गंगा के भागीरथः कमल किशोर गोयनका' में गोयनकाजी के विषय में लिखती हैं कि- 'प्रेमचंद साहित्य के अध्येता- डॉ. कमल किशोर गोयनका के द्वारा रचित 757 पन्नों वाले इस प्रेमचंद शास्त्र को पढ़ते हुए एक बात निश्चित रूप से सामने आई कि उनकी रचनात्मक शिराओं में प्रेमचंद कुछ यूं रच बस गए हैं कि उन्होंने प्रेमचंद के जीवन, परिवेश, व साहित्य में धंसकर जिस साहित्य का सृजन किया है, वही उनकी रचनाधर्मिता की प्रामाणिकता है जो उन्हें प्रेमचंद स्कॉलर और प्रेमचंद विशेषज्ञ के नाम से एक अलग पहचान से अलंकृत करने से नहीं चूकी। यह हिंदी में एक अनूठे ढंग का प्रयास है और भविष्य में मील का पत्थर माना जाएगा। यही नहीं इससे प्रेरणा पाकर कुछ और अन्वेषणकर्ता इस प्रकार के कार्य शुरू करेंगे, और हिंदी में अन्य यशस्वी कवि-लेखकों के विश्वकोश के निर्माण-कार्य से संलग्न होंगे।'[7]

'प्रेमचंद और समाजवाद' विषय पर डॉ. कमल किशोर गोयनका ने भारतीय दृष्टिकोण को आधार में रखकर प्रेमचंद के मत पर एक नए प्रकार से पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। 18 मार्च, 1928 को 'राज्यवाद और साम्राज्यवाद' नामक लेख जो कि 'स्वदेश' में प्रकाशित हुआ था, उसमें प्रेमचंद ने लिखा कि- 'साम्यवाद से ऐसी ही लंबी-चौड़ी आशाएं बांधी गई थीं, मगर यह अनुभव हो रहा है कि साम्यवाद केवल पूंजीपतियों पर मजूरों की विजय का आंदोलन है। न्याय के अन्याय पर, सत्य के मिथ्या पर विजय पाने का नाम नहीं। वह सारी विषमता, सारा अन्याय, सारी स्वार्थपरता, जो पूंजीवाद के नाम से प्रसिद्ध है, साम्यवाद के रूप में आकर क्षणभंगुर भी कम नहीं होती, बल्कि उससे और भयंकर हो जाने की संभावना है।'[8] डॉ. कमल किशोर गोयनका ने इस लेख के माध्यम से दर्शाया कि प्रेमचंद कार्ल मार्क्स, लेनिन, जार-सत्ता और कम्युनिस्ट पार्टी की गतिविधियों और विचारों से भली भांति परिचित थे। प्रेमचंद समाजवाद की बाहरी थोपी हुई अवधारणा के पक्षधर नहीं थे। वे चीजों को भारतीय परिप्रेक्ष्य में विचार कर स्वीकारने के पक्षधर थे।

डॉ. कमल किशोर गोयनका ने प्रेमचंद की समाजवाद विषयक अवधारणा का अवलोकन किया और निष्कर्ष रूप में बताया कि- 'प्रेमचंद के समाजवाद-दर्शन पर विवेकानंद और गांधी का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वे एक स्थान पर तो विवेकानंद की ही शब्दावली में समाजवाद का संबंध वेदांत के एकात्मवाद से जोड़ते हुए लिखते हैं, यहां तो वेदांत के एकात्मवाद ने पहले ही समाजवाद के लिए मैदान साफ कर दिया है। हमें उस एकात्मवाद को केवल व्यवहार में लाना है। जब सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा का निवास है, तो छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेद क्यों? प्रेमचंद विवेकानंद और गांधी के इस विचार से सहमत हैं कि यूरोप के समाजवाद के स्थान पर भारतीय समाजवाद हो, जिस पर 'भारतीयता' की छाप हो, जिसमें स्वार्थ और लूट प्रधान न हो, नीति और धर्म प्रधान हो।'[9]

प्रेमचंद के इस मत के आधार पर कहा जा सकता है कि गोयनकाजी ने प्रेमचंद को आलोचकों के एकांगी नजरिए से बाहर निकालकर साहित्य जगत को प्रेमचंद के हवाले से यह बताने का प्रयास किया कि प्रेमचंद भी किसी भी वाद, विचार या दृष्टि को विदेशी स्वीकृति के रूप में स्वीकार करने के पक्षधर नहीं थे। वे भारत में 'भारतीयता' के आधार पर उसकी स्वीकारोक्ति चाहते थे।

डॉ. कमल किशोर गोयनका की पुस्तकों को मंगवाकर डॉ. रामविलास शर्मा द्वारा पढ़ना यह दर्शाता है कि डॉ. रामविलास शर्मा जैसा बड़ा आलोचक अपनी पुस्तक 'प्रेमचंद और उनका युग' के चतुर्थ संस्करण निकालने से पहले डॉ. कमल किशोर गोयनका की पुस्तक को पढ़ना अनिवार्य समझता है और डॉ. शिवकुमार मिश्र का कथन 'जो काम गोयनका ने प्रेमचंद पर किया, वह हम प्रगतिशीलों ने क्यों नहीं किया।'[10] भी गोयनकाजी की प्रेमचंद साहित्य पर विशिष्ट आलोचना दृष्टि को दर्शाता है। डॉ. कमल किशोर गोयनका के इस योगदान को हिंदी के कई प्रतिष्ठित लेखकों-आलोचकों ने सराहा है। इनमें हम आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, शिवमंगल सिंह सुमन, डॉ. नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल और राजी सेठ आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

पुष्पिता अवस्थी अपने लेख 'कमल किशोर गोयनका: एक बड़े लेखक का प्रतिबिंब' में गोयनकाजी के लेखन, शोध व आलोचना प्रक्रिया पर विचार करते हुए कहती हैं कि- गोयनकाजी के अन्वेषण, शोध एवं विवेचन की पद्धति पुरानी है। कार्ड पद्धति से हर प्रविष्टि को दर्ज करना और उसी वैज्ञानिक पद्धति से सारे संदर्भों को समेटने का काम कोई आसान नहीं है पर अपनी भीतरी इच्छाशक्ति और श्रमसाध्य लगन के बलबूते गोयनका ने इस कार्य को अपने लिए तप बना लिया है। अब तक भारतीय हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में प्रेमचंद के साहित्य को लेकर 400 के लगभग शोध लेख उनके प्रकाशित हुए हैं तथा कई गंभीर मसलों पर वे आज भी उसी निष्ठा से कार्यरत हैं। अचरज है कि प्रेमचंद पीठ पर बैठने वाले साहित्यकारों ने प्रेमचंद पर नगण्य काम किया और गोयनका ने कभी भी किसी प्रेमचंद पीठ पर आसीन न होने के बावजूद वह कार्य संभव किया है, जो बड़ी संस्थाएं भी नहीं कर पाती हैं। अस्सीवें वर्ष में प्रवेश करते हुए गोयनकाजी में आज भी एक युवकोचित उत्साह है। वे अभी भी तमाम साहित्यिक परियोजनाओं से संबद्ध हैं। प्रवासी साहित्य की दिशा में समय-समय पर उनके प्रयत्न यह दर्शाते हैं कि यदि हिंदी को वैश्विक भाषा बनना है तो वह केवल भारतीय हिंदी लेखकों के बलबूते नहीं, विश्व भर के हिंदी लेखकों को साथ लेकर चलने से बनेगी। कहना न होगा कि गोयनकाजी की साहित्यिक यात्रा उनकी अपनी अंतश्चेतना की वीथियों से गुजर कर मंजिल तक पहुंची है तथा अभी भी बहुत सारा कार्य शेष है। जिस तरह निराला पर मात्र अपनी तीन खंडों की आलोचना पुस्तक 'निराला की साहित्य साधना' लिखकर रामविलास शर्मा ने पूरे हिंदी जगत में ख्याति पाई है, प्रेमचंद के विभिन्न पहलुओं पर लगभग पचास पुस्तकें रचने वाले गोयनका ने उससे कम ख्याति और प्रतिष्ठा अर्जित नहीं की है। जिस संजीदगी से उन्होंने अपने उत्तर जीवन को इस ओर एकाग्र किया है वह हिंदी जगत में एक मिसाल है।'[11]

दलित चिंतन को आधार बनाते हुए डॉ. कमल किशोर गोयनका ने लिखा कि दलित चिंतन तो विमर्श के रूप में काफी बाद में प्रकाश में आया। इससे बहुत पहले ही कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से दलितों के पक्ष में आवाज उठाते हुए अपनी कहानियों के माध्यम से उसे अभिव्यक्ति दी है। प्रेमचंद द्वारा रचित 'बांका जमींदार', 'पशु से मनुष्य', 'सवा सेर गेहूं', 'शूद्रा', 'कजाकी', 'खुदी', 'सद्गति', 'खेल', 'तावान', 'ठाकुर का कुआं' और 'दूध का दाम' आदि कहानियों में हम प्रेमचंद के दलित विमर्श को जान सकते हैं। 'गोदान' और 'रंगभूमि' नामक उपन्यासों में भी हम इस दृष्टि को देख सकते हैं। 'रंगभूमि' को लेकर भले ही प्रेमचंद को दलित विरोधी बताया गया किंतु प्रेमचंद का दृष्टिकोण बड़ा स्पष्ट था।

प्रेमचंद की कहानियों में दलित विमर्श को ध्यान में रखकर डॉ. कमल किशोर गोयनका ने भारतीय हिंदी साहित्य में दलित विमर्श के यथार्थ पर भी प्रकाश डाला है। वे लिखते हैं- 'दलित लेखकों ने स्वानुभूति और परानुभूति के प्रश्न को उठाकर भी दलित लेखन को गैर दलित लेखकों के साहित्य से अलग करने का प्रयत्न किया है। ये दलित लेखक इस तर्क से दलित लेखकों के स्वानुभूति से रचे साहित्य को एक स्वतंत्र स्वायत्त इकाई के रूप में स्थापित करते हैं और डॉ. अंबेडकर को आदि स्रोत मानकर साहित्य और चिंतन की विगत परंपरा से स्वयं को विलग कर लेते हैं। यही कारण है कि प्रेमचंद और निराला जैसे दलित-समर्थक एवं दलित-चेतना का विस्तार तथा जागृति उत्पन्न करने वाले लेखक भी उनके दलित विमर्श में स्थान नहीं पाते तथा जिन संत कवियों ने जातिवाद के विरुद्ध आवाज उठाई, वे भी उपेक्षा का शिकार हो गए।'[12] वास्तव में प्रेमचंद ने 'सूरदास' नामक पात्र के माध्यम से एक अछूत पात्र में गांधी दर्शन को अभिव्यक्ति दी है। अंधे भिखारी किंतु अंतर्दृष्टि संपन्न सूरदास के व्यक्तित्व को विशिष्टता से अभिव्यक्ति दी। प्रेमचंद इसके माध्यम से किसी जाति का अपमान नहीं करना चाहते थे। प्रेमचंद की मान्यता लोक सामान्य की मान्यता से कुछ अलग है। तभी तो डॉ. कमल किशोर गोयनका प्रेमचंद की जाति विषयक दृष्टि पर प्रकाश डालते हुए दर्शाना चाहते हैं कि प्रेमचंद की जाति को लेकर धारणा कुछ अलग प्रकार की थी। तभी तो प्रेमचंद अपनी रचना के एक पात्र से ये कहलाते हैं कि- 'मैं ब्राह्मण नहीं, दलित ही रहना चाहता हूं। जो अपना धरम पाले वही ब्राह्मण, और जो धरम से मुंह मोड़े वही दलित है।' प्रेमचंद इस उत्तर से ब्राह्मण, दलित आदि के जन्म से होने के विश्वास को खंडित करते हैं और धर्माचरण में ही जातिगत श्रेष्ठता देखते हैं। 'महाभारत' के भीम और सर्प रूपी राजा नृग के संवाद में नृग युधिष्ठिर से पूछता है कि ब्राह्मण कौन है? युधिष्ठिर कहते हैं कि जिसके मन में दया, करुणा, वैराग्य, तपस्या, दान लेना-देना, अध्ययन-अध्यापन आदि गुण हों, वह ब्राह्मण है, लेकिन नृग ने आपत्ति की कि ये गुण तो शूद्र में भी हो सकते हैं। इस पर धर्मराज का उत्तर था, 'जिस मनुष्य में ये गुण हों, वह शूद्र नहीं ब्राह्मण है और जिस मनुष्य में ये गुण न हों, वह ब्राह्मण वंश में जन्म लेकर भी शूद्र है।'[13] गोयनकाजी इस कथन के माध्यम से दर्शाना चाहते हैं कि प्रेमचंद जाति को जन्मना नहीं कर्मणा ही स्वीकारते थे।

'प्रेमचंद शोध की नई दिशाएं' विषयक लेख के माध्यम से गोयनका कहते हैं कि लगभग दो सौ शोध ग्रंथों के बाद भी प्रेमचंद साहित्य पर शोध की अभी संभावनाएं हैं। दस्तावेज, पत्र, पांडुलिपियां, फोटोग्राफ और अन्य अज्ञात साहित्य प्रेमचंद के जीवन और साहित्य के नए आयामों को उद्घाटित करता है। उनका मानना है कि प्रेमचंद पर शोध को एक पूरा जीवन समर्पित किया जा सकता है। प्रेमचंद पर अध्ययन करते हुए डॉ. कमल किशोर गोयनका ने तीन बातों को ध्यान में रखा। वे लिखते हैं कि- 'मेरे इस शोध कर्म ने प्रेमचंद के संबंध में तीन दिशाओं को खोला है-

1. उनके जीवन के दस्तावेजों की खोज और उनके अज्ञात तथ्यों का प्रकाशन।
2. हिंदी-उर्दू की अज्ञात एवं दुर्लभ रचनाओं को खोजना एवं प्रकाशित करना।
3. प्रेमचंद के विचार पक्ष का तथ्यों एवं प्रमाणों के आधार पर मूल्यांकन और दुराग्रही आलोचना से मुक्त करना।'[14]

डॉ. कमल किशोर गोयनका ने ऐसी कई धारणाओं को निर्मूल कर दिया जो प्रेमचंद के विषय में बन चुकी थी। उन्होंने प्रमाण उपलब्ध करवाकर इस बात को निर्मूल सिद्ध कर दिया कि 'प्रेमचंद गरीबी में पैदा हुए, गरीबी में जिए और गरीबी में ही मर गए।' प्रेमचंद ने बेटी के विवाह में दहेज दिया था, इस बात को भी डॉ. कमल किशोर गोयनका ने सप्रमाण सिद्ध किया है। उन्होंने 'सरस्वती प्रेस' व प्रवासी लाल वर्मा 'मालवीय' के साथ प्रेमचंद के व्यवहार को भी सप्रमाण दर्शाया। इस प्रकार गोयनका ने प्रेमचंद के जीवन से जुड़े कई विषयों को जो कि किसी विचार विशेष के लोगों द्वारा प्रचारित किए गए हैं, को झूठा और अतार्किक-अप्रामाणिक सिद्ध करते हुए अपनी नूतन स्थापनाएं दी हैं।

डॉ. कमल किशोर गोयनका का मत है कि कुछ रचनाओं के सहारे हम प्रेमचंद को समग्रता से जान सकते। प्रेमचंद को ठीक से जानने के लिए उन्हें पूरे विस्तार से पढ़ना जरूरी है। प्रेमचंद साहित्य का विचार पक्ष महत्वपूर्ण है। प्रेमचंद को गांधीवाद व समाजवाद के आलोक में जानना चाहिए। गांधी से प्रभावित प्रेमचंद की मान्यता समाजवाद के विषय में वैसी नहीं है, जैसी कि प्रगतिवादी आलोचक दर्शाते हैं। प्रेमचंद का अपने व्याख्यान में प्रगतिशील शब्द को गौण मानकर 'आध्यात्मिक आनंद', 'आध्यात्मिक संतोष' और मन के संस्कारों को प्रमुखता देते हैं। स्वराज्य की प्राप्ति और भारतीय आत्मा की रक्षा इन दो बातों को प्रेमचंद ने अपने उद्देश्यों के रूप में स्वीकारा था। इस विषय में डॉ. कमल किशोर गोयनका कहते हैं कि- 'प्रेमचंद साहित्य की विराटता और विविधता में भारतीयता के दर्शन होते हैं। इसी भारतीय आत्मा को गांधी 'हिंद स्वराज्य' में, मैथिलीशरण गुप्त 'भारत भारती' में, प्रेमचंद 'सोजेवतन' में तथा जवाहर लाल नेहरू 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' में तलाश रहे थे। अतः प्रेमचंद को भारतीयता का लेखक कहना मुझे सार्थक लगता है। प्रेमचंद की भारतीयता में जो भारतीय आत्मा है, वह अनेक रूपात्मक है और उसके अंग हैं-राष्ट्र प्रेम, स्वराज्य, संस्कृति एवं मूल्यवादी उत्कर्ष, इतिहास की समकालीनता, सामाजिक जागरण और सामरस्य एवं एकता आदि।'[15]

डॉ. कमल किशोर गोयनका अपने अध्ययन से इस बात को सिद्ध करते हैं कि-'उनकी (प्रेमचंद) भारतीयता में हिंदूवाद, राष्ट्रवाद, गांधीवाद, मानववाद, साम्यवाद आदि सभी किसी न किसी रूप तथा मात्र में समाविष्ट हैं। इनमें से कोई भी एक विचारधारा प्रेमचंद के विराट औपन्यासिक संसार को प्रकट करने का दावा नहीं कर सकती, इसलिए वे भारतीय आत्मा के कुशल शिल्पी हैं। इसी कारण प्रेमचंद वाल्मीकि, व्यास, कालिदास, तुलसीदास, कबीर की परंपरा में आते हैं और उनके समान ही कालजयी हैं।'[16]

प्रेमचंद के कम्युनिस्ट होने की बात पर डॉ. कमल किशोर गोयनका का मत है कि- 'उन्होंने (प्रेमचंद ने) कहा, 'मैं कम्युनिस्ट हूं लेकिन मेरा कम्युनिज्म गांधी का भी नहीं है। मेरा कम्युनिज्म है कि किसानों पर महाजनों का अत्याचार नहीं होना चाहिए।' यह उनका कम्युनिज्म है। भारतीय दृष्टिकोण वाले भी तो यही चाहते हैं। किसी का शोषण नहीं होना चाहिए। जब मैं यह कहता हूं कि किसानों का शोषण नहीं होना चाहिए तो क्या मैं कम्युनिस्ट हो जाऊंगा? जब हम कहते हैं कि सारी सृष्टि नारायण की है। जब हम मनुष्य की एकता की बात करते हैं तो हम साम्यवाद की बात स्वीकार क्यों करें। जब हमारा भारतीय दर्शन मनुष्य की एकता की बात करता है। अद्वैतवाद कहता है कि सब मनुष्य बराबर हैं। सब ईश्वर की संतान हैं तो मैं इस दर्शन को स्वीकार करूंगा या मार्क्सवादी दर्शन से स्वीकार करूंगा? इसलिए प्रेमचंद में जो भारतीयता है, जो उनके जीवन मूल्य हैं, जो उनके साहित्य में आए हैं, वे भारतीय सनातन परंपरा से आए हैं। वे मार्क्स से नहीं आए हैं।'[17]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि डॉ. कमल किशोर गोयनका का प्रेमचंद विषयक गंभीर और गहन चिंतन पाठकों को प्रेमचंद साहित्य के विषय में एक नूतन दृष्टि देता है। उनका अध्ययन और आलोचना कर्म प्रेमचंद के जीवन व साहित्य के विषय में अनेक अनछुए पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए हिंदी संसार को प्रेमचंद विषयक नवीन जानकारियों से अवगत कराता है। प्रेमचंद अध्ययन के अनेक नए आयाम हो सकते हैं, यह हम डॉ. कमल किशोर गोयनका के शोध और आलोचना के माध्यम से जान सकते हैं।

□

संदर्भ सूची

1. डॉ. अनूप सिंहः 'आइए हस्ताक्षरों से बात करें', *बुलंदप्रभा,* सं. डॉ. अनूप सिंह, जनवरी-जून, 2018, बुलंदशहर, पृष्ठ-03, 2. डॉ. कमल किशोर गोयनकाः 'वह दौर था जब प्रेमचंद के अलावा कुछ सूझता न था', वही, पृष्ठ-19, 3. कर्ण वीर सिंह सिकरवारः 'प्रेमचंद साहित्य के अनन्यतम अध्येताः डॉ. कमल किशोर गोयनका', *बुलंदप्रभा,* सं. डॉ. अनूप सिंह, जनवरी-जून, 2018, बुलंदशहर, पृष्ठ- 39, 4. कर्ण वीर सिंह सिकरवारः 'डॉ. गोयनका का साहित्यिक रचना-कर्मः प्रेमचंद पर प्रकाशित पुस्तकें', *बुलंदप्रभा,* सं. डॉ. अनूप सिंह, जनवरी-जून, 2018, बुलंदशहर, पृष्ठ- 41, 5. डॉ. कमल किशोर गोयनकाः 'प्रेमचंद और समाजवाद', *बुलंदप्रभा,* सं. डॉ. अनूप सिंह, जनवरी-जून, 2018, बुलंदशहर पृष्ठ- 60, 6. वही, पृष्ठ- 62, 7. डॉ. कमल किशोर गोयनकाः 'प्रेमचंदः डॉ. रामविलास शर्मा और मैं', वही, पृष्ठ-73, 8. डॉ.कमल किशोर गोयनकाः सं. *प्रेमचंदः संपूर्ण दलित कहानियां,* सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, 2014, भूमिका, पृष्ठ-16, 9. वही, पृष्ट- 19, 10. डॉ. कमल किशोर गोयनकाः 'प्रेमचंदः शोध की नई दिशाएं', *गवेषणा,* प्र.सं. प्रो. नंदकिशोर पांडेय, अंक 111, जनवरी-मार्च, 2018, पृष्ठ- 10, 11. वही, पृष्ठ-16, 12. वही, पृष्ठ- 16, 13. डॉ. गोयनका से सतीश पेडणेकर की बातचीत, *पांचजन्य,* 5 अगस्त, 2018, पृष्ठ- 08।